शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2014

'रंगभूमि' उपन्यास में अहिंसा विचार

इन्दु हुड्डा (शोधार्थी)
हिन्दी विभाग
वनस्थली विद्यापीठ
राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

आज के हिंसामय समाज में अहिंसा का महत्त्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। आज प्रत्येक व्यक्ति, सम्प्रदाय, समाज और राष्ट्र अपने हितों की पूर्ति के लिए दूसरे के प्रति हिंसक व्यवहार करने में जरा भी नहीं हिचक रहा है। संसार में व्याप्त अविश्वास, असंयम, भय, आशंका से हिंसा के व्यवहार में दिन-दूना और रात-चौगुना विस्तार हो रहा है। दुनिया के राष्ट्र आज भयंकर मारक शास्त्रास्त्रों से लैस होकर एक-दूसरे के प्रति अविश्वास, आशंका और भय के वातावरण में जी रहे हैं। अपनी सुरक्षा हेतु ऐसे विध्वंसक शस्त्रास्त्रों का निर्माण हुआ है कि पलक झपकते आधी दुनिया से मानव जाति का सफाया हो जाए। ऐसी स्थिति में अहिंसा ही एक ऐसी शक्ति है जो मानव जाति को इस सर्वनाश से बचा सकती है। इस विषय पर साहित्यकारों ने बहुत गहराई से विचार किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद के 'रंगभूमि' उपन्यास में अभिव्यक्त अहिंसा संबंधी विचारों पर प्रकाश डाला गया है।

प्रस्तावना

जब से मनुष्य सभ्यता का जन्म हुआ है तब से हिंसा और अहिंसा पर विचार होता रहा है। वास्तव में मनुष्य ने आज तक जो विकास किया है वह अहिंसा की तलाश ही है। 'अहिंसा' का अर्थ मात्र किसी को न मारना ही नहीं है। अहिंसा अपने में व्यापक अर्थ को धारण किए हुए हैं।

''कर्मणा मनसा वाचा सर्वभूतेषु सर्वदा।
अक्लेश जननं प्रोक्ता त्वहिंसा परमार्षिभिः।।''1

अर्थात् किसी भी जीव को मन, वचन व कर्म से किसी भी रूप में, किसी भी प्रकार का क्लेश न पहुँचाने का नाम 'अहिंसा' है। अहिंसा का अर्थ - नेत्र, मन, वचन व शरीर से उन प्रवृत्तियों को नहीं करना है, जिनसे किसी प्राणी को कष्ट या पीड़ा हो तथा कर्मेन्द्रियों व ज्ञानेन्द्रियों की उन प्रवृत्तियों पर संयम और अंकुश रखना जिससे अन्य प्राणियों का अनेष्ट हो। अहिंसा का अर्थ है- ''प्राणी पीड़क अहंकार, काम, क्रोध व लोभ आदि विकारों का त्याग।''2

वास्तव में अहिंसा वह व्यवहार है जो व्यवहार हम दूसरों के द्वारा अपने लिए किए जाने की अपेक्षा करते हैं वैसा ही व्यवहार हम दूसरों के प्रति करें। इस दृष्टि से अहिंसा रूपी महानदी में क्षमा, मैत्री, दया, करुणा, प्रेम, उदारता, परोपकारिता, सहअस्तित्व की भावना, मानसिक सरलता व पवित्रता, समताभाव सभी प्राणियों में आत्मवत् दृष्टि जैसी विविध धाराएँ समाहित हैं।

यूं तो सत्य, अहिंसा की परम्परा अत्यंत प्राचीन है। परन्तु गांधी जी ने इस प्राचीन परम्परा को बनाये रखते हुए अहिंसा को एक नया एवं व्यापक भावार्थ प्रदान किया। गांधीजी को 'महात्मा' के विशेषण से सुशोभित किया गया है।

उनको 'महात्मा' इसलिए कहा गया क्योंकि वे मनसा-वाचा-कर्मणा एक थे। गांधीजी जो ठीक समझते थे वह कहते थे, जो कहते थे वह करते थे। दूसरों से करने के लिए जो वह कहते थे, उसे पहले स्वयं करते थे। उन्होंने बार-बार कहा है कि उनके विचार नवीन नहीं है। सभी धर्मग्रंथों में ये विचार पहले रखे हुए हैं। उन्होंने केवल उन विचारों को जाँच परख कर श्रद्धा और साहसपूर्वक किसी दूसरे की प्रतिक्षा किए बिना अपने जीवन में उतारा। सत्य व अहिंसा गांधी जी के अमोघ अस्त्र थे जिसके आधार पर गांधीवाद को विश्व की अन्य विचारधाराओं से अलग व स्वतंत्र पहचान प्राप्त हुई है और 1920-1939 तक का समय गांधीयुग के नाम से जाना गया।

महात्मा गांधी और अहिंसा

गांधीजी के अनुसार "कुविचार मात्र हिंसा है। उतावली हिंसा है। मिथ्या आचरण हिंसा है। किसी का बुरा चाहना हिंसा है। जगत को जिस चीज की आवश्यकता है, उस पर कब्जा करना हिंसा है।"3 गांधजी ने अहिंसा को निषेधात्मक के स्थान पर विधेयात्मक शक्ति कहा। उनके अनुसार "यह बुराई को अच्छाई से जीतने का सिद्धांत है। जिसमें कोई बदले की भावना नहीं है, कोई संगठित युद्ध या गुप्त हत्या नहीं है।"4 वस्तुतः अहिंसा का अर्थ है "प्रेम का समुद्र, वैरभाव का सर्वथा त्याग, अहिंसा में दीनता, भीरूता न हो, डरकर भागना भी न हो। अहिंसा में दृढ़ता, वीरता, निश्च्छलता होनी चाहिए।"5 गांधीजी ने कहा कि अहिंसक व्रतधारी व्यक्ति को अपने शत्रु के प्रति भी प्रेम भाव होना चाहिए, वह अपने शत्रु से किसी भी प्रकार का इर्ष्या, द्वेष व वैर भाव न रखें। उन्होंने यह भी कहा कि अहिंसा के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति को डरना नहीं चाहिए क्योंकि सत्य ही ईश्वर है इसलिए चाहे "जमीन जाए, धन जाये, शरीर जाए, इसकी परवाह न करें। ..... अहिंसा का पुजारी एक ईश्वर का ही भय रखे और दूसरे सब भयों को जीत ले।"6 गांधीजी मानते थे कि अहिंसावादी को उपर्युक्त त्याग वृत्ति से ओत-प्रोत होना चाहिए व उसमें अपने मार्ग से न हटने की दृढ़ता होनी चाहिए। अहिंसा के आंतरिक तत्वों के आधार पर ही गांधीजी ने अहिंसा को एक दर्शन, कार्य पद्धति के साथ-साथ हृदय परिवर्तन का साधन माना।

गांधीजी ने अहिंसा का प्रयोग अपने जीवन में किया और संपूर्ण देश का इस सिद्धांत के साथ तादात्म्य कराया। इस प्रकार गांधीजी की अहिंसा परम्परागत अहिंसा से भिन्न हो गई और उसमें व्यवहारिकता समाहित हुई। गांधीजी प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने सामूहिक तौर पर राजनीति के क्षेत्र में इस सिद्धांत का सफल प्रयोग किया। गांधीजी ने देश को स्वतंत्र कराने के लिए अहिंसा को सविनय अवज्ञा आंदोलन, निष्क्रिय आंदोलन, असहयोग, सत्याग्रह आदि आंदोलनों का आधार बनाया। प्रत्येक वर्ग, सम्प्रदाय, आयु वर्ग ने अहिंसा के अस्त्र को धारण कर स्वतंत्रता प्राप्ति में गांधी जी को सहयोग प्रदान किया और एक स्वतंत्र भारत का निर्माण किया।

कोई भी साहित्य अपने युग का आइना होता है। तत्कालीन समाज में जो भी घटित होता है वहीं साहित्य में प्रतिफलित होता है। साहित्यकार अपने समाज में जो कुछ देखता है वहीं अपने साहित्य में उकेरता है। 1920-1939 तक का समय 'गांधी युग' से जाना गया। यही वह समय था जब देश को आजाद कराने के लिए असहयोग, सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा, निष्क्रिय प्रतिरोध जैसे अनेक आंदोलन राजनीतिक मंच पर गूँज रहे थे।

अपने युग के सच्चे और जीवंत प्रतिनिधि होने के कारण प्रेमचन्द ने भी अपने उपन्यासों में गांधी चिंतन को आधार बनाया। जो कार्य गांधी जी राजनीतिक मंच से कर रहे थे वही कार्य प्रेमचन्द साहित्य के द्वारा कर रहे थे। प्रेमचन्द ने अपने लगभग सभी उपन्यासों में गांधी विचारधारा को आधार बनाकर समस्याओं का समाधान किया है। 'रंगभूमि' गांधी विचारधारा से प्रभावित प्रेमचन्द की महत्वपूर्ण रचना है।

रंगभूमि में अहिंसा

'रंगभूमि' का रचनाकाल भारत के राजनीतिक रंगमंच पर गांधीवाद के चरमोत्कर्ष का युग है। यह सन् 1920 तथा सन् 1930 के बीच की कृति है। इस समय गांधीजी का प्रथम सत्याग्रह आंदोलन स्थगित किया जा चुका था और दूसरे बड़े सविनय अवज्ञा आंदोलन की तैयारियाँ हो रही थी। रंगभूमिकार प्रेमचन्द की मानसिक पृष्ठभूमि गांधी जी के सत्याग्रह आंदोलन की विचारधारा से ओतप्रोत है। गांधी विचारधारा के सशक्त समर्थक उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द के उपन्यासों में सर्वत्र अहिंसावादी सिद्धांत का प्रतिपादन हुआ है। प्रेमचन्द के सभी सात्विक गुण सम्पन्न पात्र अहिंसावादी हैं। 'रंगभूमि' का सूरदास एक महत्वपूर्ण अहिंसावादी चरित्र है। सूरदास के प्रति अनेक प्रकार के अन्याय और अत्याचार होते हैं। परन्तु वह उन्हें धैर्यपूर्वक स्वीकार करता है और अहिंसात्मक तरीकों से उनका शांतिपूर्ण विरोध करता है। 'रंगभूमि' में सूरदास को जमीन के बदले उसके विरोधी साम-दाम-दण्ड और भेद सभी नीतियों को अपनाते हैं परन्तु सच्चे अहिंसक की भांति 'दाम' का उसे लोभ नहीं है, 'दण्ड' का उसे भय नहीं है। एक सच्चे अहिंसक की तरह वह केवल परोपकारवश गाँव वालों की भलाई के लिए अपनी जमीन देने को तैयार नहीं है। उसे इस संबंध में पता भी है और वह कहता भी है "मेरे देने पर थोड़े ही हैं भाई, मैं दूं, तो भी जमीन निकल जायेगी, न दूं, तो भी निकल जाएगी।"7 परन्तु सूरदास के अनुसार जमीन देना मतलब गाँव में आर्थिक शोषण, नैतिक अधःपतन तथा सामाजिक दुर्गुणों और व्यसनों का प्रसार करना।

गांधीवाद अहिंसा शरीरबल अथवा पशुबल पर आत्मबल की प्रतिष्ठा करता है। प्रेमचन्द के समस्त कथा-साहित्य में सूरदास पशुबल पर आत्मबल की विजय का सर्वश्रेष्ठ प्रतीक है। शारीरिक दृष्टि से अपंग होते हुए भी अपने आत्मबल के सहारे वह साम्राज्यवाद, सामंतवाद तथा पंूजीवाद की सम्मिलित ताकतों से अकेला ही लोहा लेता है।

आदर्श सत्याग्रही पूर्णतः अहिंसक होता है। सूरदास प्रत्येक अवस्था में पूर्ण अहिंसक है जिसका अर्थ है किसी प्रकार के भय, क्रोध या प्रतिरोध के बिना, प्राण देने की क्षमता का पालन करता है। एक सच्चे अहिंसावादी की तरह सूरदास को भी न तो भय है, न ही वह किसी पर क्रोध करता है और न किसी से उसका प्रतिरोध है। एक सच्चे अहिंसक सत्याग्रही की तरह सूरदास भी अपने विरोधी का पूरी शक्ति से विरोध करते हुए भी उसका बुरा नहीं सोचता। "उसका जीवन दर्शन एक खिलाड़ी का दर्शन है, जो हारकर अपने प्रतिपक्षी पर क्रोध नहीं करता और जीतकर उसका उपहास नहीं करता।" सोफिया द्वारा उकसाए जाने पर भी सूरदास अपने सिद्धांत पथ से विचलित नहीं होता। वह स्पष्ट शब्दों में कह देता है कि 'उसके हृदय में अपने विरोधी राजा महेन्द्र कुमार के प्रति किसी प्रकार की दुर्भावना नहीं है।'9 इसी प्रकार 'अपने सबसे शक्तिशाली

प्रतिद्वन्द्वी जान सेवक को मिठुआ द्वारा पुतलीघर में आग लगाने की बात से सावधान करता है।'10 इतना ही नहीं उसकी जमीन को लेकर हुआ आंदोलन जब हिंसक हो जाता है और लठैत जान सेवक के कारखाने को घेर लेते हैं तो वह हिंसापूर्ण कार्य को सहन नहीं कर पाता और उनसे कहता है- "तुम लोग यह ऊधम मचाकर मुझे क्यों कलंक लगा रहे हो।..... लहु बहाने से मेरा चित्त शांत न होगा।..... परमात्मा से कहिए, मेरा दुख मिटाएँ। भगवान से विनती कीजिए, मेरा संकट हरे। जिन्होंने मुझ पर जुलुम किया है, उनके दिल में दया, धरम जागे, बस मैं आप लोगों से और कुछ नहीं कहता।"11

गांधीजी ने अहिंसा को हृदय परिवर्तन का साधन माना है। एक अहिंसक सत्याग्रही को निरंतर भलाई करते देखकर विरोधी स्तंभित रह जाता है और धीरे-धीरे अहिंसक सत्याग्रही की अच्छाईयों के फलस्वरूप उसका मित्र बन जाता है। भैरों भी सूरदास की आंतरिक निर्मलता से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। 'अंत में वह भी अपने अपराधों को स्वीकार कर लेता है।'12 इसी प्रकार 'घीसू को लेकर बजरंगी सूरदास का कट्टर शत्रु हो जाता है, पर कालान्तर में उसे भी सूर की सच्चाई तथा ईमानदारी का कायल होना पड़ता है और वह अपनी भूल पर पश्चाताप करता है।'13

इस प्रकार संपूर्ण उपन्यास में सूरदास एक सच्चे अहिंसावादी की तरह सभी कष्टों को सहता हुआ अन्याय का प्रतिकार करता है। उसे अनेक प्रकार के प्रलोभन दिए जाते हैं पर वह अपने पथ पर अडिग रहता है। उसे अनेक कष्टमय परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। परन्तु संपूर्ण उपन्यास में परोपकार, क्षमा, आत्मबल की वह प्रतिमूर्ति कहीं भी अपने विरोधी के प्रति क्रोध भाव या आवेश प्रकट नहीं करती। यद्यपि सूरदास अपनी यह जंग हार जाता है परन्तु नैतिक दृष्टि से वह विजयी रहता है। वह आत्मबल से पशुबल और शरीर बल को जीत लेता है। अपनी जमीन बचा लेने में उसके आत्मबल और नैतिकता की विजय नहीं है बल्कि एक सच्चे अहिंसावादी की तरह प्रतिपक्षियों को भी अपने सत्यप्रियता से अपना मित्र बना लेना उसकी विजय है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अहिंसा वह कर सकती है जो हिंसा नहीं कर सकती। अहिंसा जहाँ अपने विरोधी के प्रति किसी प्रकार का विरोध भाव नहीं रखती और अपने शत्रु को भी क्षमा करने की शक्ति रखती है। वहाँ हिंसा केवल अपने शत्रु को खत्म करने में विश्वास रखती है। अहिंसा में हृदय परिवर्तन की विशेषता है वह अपने निश्च्छलता, ईमानदारी व सच्चाई से अपने शत्रु को मित्र बना सकती है। अहिंसा का मार्ग लम्बा अवश्य ही पर इस मार्ग में मंजिल का मिलना सुनिश्चित है। अतः कहा जा सकता है कि आज इस हिंसामय समाज में अहिंसा के मार्ग पर चलकर ही दुनिया आपस में मित्र बन सकती है और 'जीओ और जिने दो' के सिद्धांत को सफल बना सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. विद्यावाचस्पति सुभद्र मुनि, अहिंसा विश्वकोश (भाग-1), पृ. सं. 51
2. वही, पृ. सं. 52
3. डॉ. अमरेश्वर अवस्थी, डॉ. राम कुमार अवस्थी, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन, पृ. सं. 425
4. वही, पृ. सं. 424

5. वीरेन्द्र शर्मा, भारत के पुनर्निर्माण में गांधी जी का योगदान, पृ.सं. 61
6. वही, पृ. सं. 63
7. रंगभूमि, पृ. सं. 20
8. रामदीन गुप्त, प्रेमचन्द और गांधीवाद, पृ. सं. 178
9. रंगभूमि, पृ. सं. 206
10. रंगभूमि, पृ. सं. 470
11. रंगभूमि, पृ. सं. 196
12. रामदीन गुप्त, प्रेमचन्द और गांधीवाद, पृ. सं. 178
13. वही, पृ. सं. 180